

1. = संकुचितभोग oder प्राप्तभोग Comm. — 2) *wiedererlangen*: स्मृतिं प्रत्यवरुध्य BHĀG. P. 2, 2, 1. — Vgl. प्रत्यवरोधन.

— समव 1) *einsperren, einschliessen*: कोशकारो यथात्मानं कीटः समवरुन्धति (= °रुणाद्धि) MBH. 12, 11266. *pass. enthalten sein*: एकस्मिन्यन्नक्रतौ समवरुन्धते PAÑĀV. Br. 16, 13, 9. 19, 9, 5. — 2) *erlangen, erhalten*: °रुद्ध BHĀG. P. 10, 87, 14. — 3) *pass. ausgeschlossen werden, einer Sache verlustig gehen*: समवरुन्धते im Gegens. zu युज्यते HARIV. 11778 nach der Lesart der neueren Ausg. (NILAK. macht auf die überschüssige Silbe aufmerksam).

— आ 1) *einschliessen, einsperren*: वत्सानारुध्य शादले BHĀG. P. 10, 13, 7. *umzingeln, belagern*: तेषु तेष्वकाशेषु शोभमारुध्यतां पुरी HARIV. 5013. — 2) *abwehren, verscheuchen*: बन्धुतां शुचमारुणात् BHATT. 17, 49. — 3) *festhalten, herholen, beitreiben*: श्रारुन्धानो गद्यो समत्सु RV. 4, 38, 4. आ रुन्धां सर्वतो वायुः AV. 3, 20, 10. वायवारुन्धि नो मृगान् KAUC. 127. रसम् ÇAT. Br. 3, 9, 2, 13. 15. 24. — 4) *med. sich enthüllen, sich entwickeln (?)*: चतुरारुन्धते, श्रोत्रमा°, प्राणां श्रा° KAUSH. Up. 2, 2. श्रारुन्धे v. 1. — Vgl. श्रारोधन. — *caus. 1) versperren*: पद्मामारोधयन्मार्गम् MBH. 1, 4188. *belagern*: नगर्याः पश्चिमं द्वारं शोभमारोधयन्तु HARIV. 5013. — 2) *belästigen*: काकिनारोधयमाना R. 2, 96, 40; vgl. u. रुद्.

— समा *versperren*: तस्य मार्गं समारुध्य R. 7, 32, 42.

— उद् *hinaustreiben, verdrängen aus*: मेधावी राजा सर्वेभ्यो मात्सेभ्य उद्दौत्सीत् ÇAT. Br. 14, 7, 2, 41.

— उप 1) *einsperren, einschliessen, eintreiben*: वडवा उपरुन्धति मिश्रुन्वायं TB. 3, 8, 22, 3. ÇAT. Br. 13, 2, 2. पप्रून 3, 7, 2, 4. गाः KHĀND. Up. 4, 6, 1. अत्राश्रितोपरोत्स्यते पयसो ऽर्धे युगतये HARIV. 11138. उपरोधम् *absol.* in Verbindung mit einem loc. oder instr. P. 3, 4, 49. व्रजोपरोधं गाः स्थापयति, व्रज उपरोधम् und व्रजेनोपरोधम् Schol. उपरुद्ध ein Gefangener RAGH. 18, 17. einen Feind, eine Stadt *einschliessen, umzingeln, belagern*: उपरुद्धारिमासीत् M. 7, 195. उपरुद्ध (बल) KĀM. NĪTIS. 13, 67, 73 (hier अपरुद्ध gedruckt). बलीः समत्ताडपरुद्धं कुसुमपुरम् MUDRĀR. 41, 15. PAÑĀV. ed. orn. 33, 16. यवनोपरुद्ध्यतन BHĀG. P. 4, 28, 13. अन्धत्तरे विशितुः प्रमदोपरुद्धं (°रुद्धो?) लोकस्य *eingeschlossen, umringt* KATHĀS. 34, 259. — 2) *zurückhalten, behalten, nicht aus den Händen geben*: संभूय वणिजां पण्यमनर्धोपोपरुन्धताम् । विक्रीणातां वा विक्रितो दण्ड उत्तमसाक्षुः ॥ JĀĀN. 2, 250. — 3) *belästigen, plagen, beunruhigen, behelligen*: मा मोपरोत्सिः KATHOP. 1, 21. उपरुन्धति राजानो भूतानि विजयार्थिनः MBH. 12, 3584. RAGH. 4, 83. उपरोधति R. 7, 74, 6. उपरुन्धानाः (उपरुद्धानाम् die neuere Ausg., = अपराधवताम् NILAK.) HARIV. 6038. एवं बहुभिर्वाक्यैरुपरुन्ध्य R. 7, 73, 19. परदारान् — नोपरोद्धुमिहार्हसि 5, 47, 16. RAGH. 5, 22. MĀRK. P. 19, 5. उपरुन्ध्यमान BHĀG. P. 5, 14, 5. बाष्पवेगोपरुद्धान्तम् R. GORR. 2, 58, 25. बलीयसा 3, 43, 4. BHĀG. P. 4, 28, 15. 24. 5, 26, 16. प्राणानुपरुणात्सि मे so v. a. *bedrohen, in Gefahr bringen* R. 2, 73, 41. R. GORR. 2, 63, 41. 79, 26. उपरुन्धति मे प्राणाः 3, 73, 14. पौरा अस्मदन्वेषिणास्तपोवनमुपरुन्धति *bringen in Verwirrung* ÇĀK. 18, 10. 24, 8. — 4) *Jmd aufhalten, zurückhalten*: मा गा इत्युपरुद्धा v. 1. für अवरुद्धा ÇĀK. 35. *Etwas hemmen, unterbrechen, stören*: प्रवृत्तं नोपरुन्धेत शनैरग्निमिवेन्धयेत् MBH. 12, 7817. शस्त्रं द्विजातिभिर्ध्याक्षं धर्मो यत्रोपरुन्धते M. 4, 348. DAÇAK. in BENF. Chr. 182, 17. कृत्यमारुब्धं किं

न पूर्वमुपरुद्धः R. 2, 36, 14. उपरुन्धते तपोऽनुष्ठानम् ÇĀK. 87, 13. उपरुद्धवृत्तिं बाष्पं कुर 90. बाष्पोपरुद्धया वाचा R. GORR. 2, 60, 4. — 5) *verhüllen, verdecken*: रेणुः — उपरुद्धो सूर्यम् RAGH. 7, 36. उपरुद्धं च जगतीं तमसेव समावृताम् R. 2, 69, 11. — 6) = अपरुद्ध *verstossen, von der Regierung ausschliessen*: सगरो ज्येष्ठे पुत्रमुपरुद्धत् R. 2, 34, 16. रामः किमकरोत्पापं येनैवमुपरुन्धते 36, 26. — Vgl. उपरोध ङ्ग. — *caus. verkürzen, verringern, Einbusse erleiden lassen*: धर्मार्थविद्याकालानुपरोधयन्कामसूत्रं तदङ्गविद्याश्च पुरुषो ऽधीयीत Verz. d. Oxf. H. 216, b, 29.

— प्रत्युप *verstopfen*: प्रत्युपरुद्धकण्ठो न किंचिद्देवे ऽश्रुपरिप्लुतातः BHĀG. P. 11, 29, 35.

— समुप *hemmen, unterbrechen, stören*: शौद्रं हि कुर्वतः कर्मधर्मः समुपरुन्धते MBH. 13, 2148.

— नि 1) *zurückhalten, festhalten, aufhalten, anhalten, in seiner Bewegung hemmen*: श्रुतरथे प्रियरथे दधानाः सद्यः पृष्टिं निरुन्धानसौ अग्मन् RV. 1, 122, 7. स निरुन्ध्या नर्द्धो यन्हे श्रमिर्विशशक्रे बलिहृतः संहेभिः 7, 6, 5. दस्युभिर्निरुन्धानो त्वं गतिः परमा नृणाम् MBH. 4, 199. एतांश्चापि निरोत्सयामि वेलेव मकरालयम् 5, 2281. 7, 5335. HARIV. 5810. ÇĀK. 16, 16. निवेष्टुकामं न्यरोत्सीत् Verz. d. Oxf. H. 239, a, 20. त्वं चेन्नीचपथेन गच्छसि पयः कस्त्वां निरोद्धुं तमः Spr. 3020. सज्जमानमकार्येषु निरुन्ध्युर्मन्त्रिणो नृपम् 3116. निरुद्धा मलिकाभिः VARĀH. BRH. S. 92, 2. KATHĀS. 4, 36. 42, 127. RĀGĀ-TAR. 1, 322. किं धर्मण निरुन्ध्यसे 4, 32. MĀRK. P. 102, 3. BHATT. 16, 20. वेगादङ्कं प्रविसृतं पवनं निरुन्ध्याम् so v. a. *einholen* MRĀKĪH. 10, 20. स्रोतः *hemmen* SUÇR. 1, 102, 2. 262, 8. निरुद्धालेपनसंज्ञस्तेनास्त्रावसंनिरोधः *den Ausfluss hemmend* 64, 13. पद्मप्रातत्रजपुटनिरुद्धेन बाष्पेण Spr. 1720. mit Ergänzung von रथम् so v. a. *lenken* ÇĀK. 169. *abhalten, abwehren*: निरुन्धानो अमतिं गोभिः RV. 1, 53, 4. वृत्रा 8, 2. AIR. Br. 1, 10. 3, 36. स्त्रात्ताडुदकात् ÇAT. Br. 13, 4, 2, 17. — 2) *hemmen, unterdrücken, verhindern, wehren*: न्यरुन्धन्नुद्धलद्वाप्यम् BHĀG. P. 1, 10, 14. 11, 33. 3, 23, 50. अत्तरिते गतिर्येषां दर्शनं च न्यरुन्ध्यत (so ist zu lösen) MBH. 4, 1053. HARIV. 11770. 11781. निजसौख्यं निरुन्धानः Spr. 1736. ऐहिकामुष्मिकान्कामान्निरुन्ध्य MĀRK. P. 39, 23. निरुद्धा वासनाः केन RĀGĀ-TAR. 3, 424. SARVADARÇANAS. 164, 5. BHATT. 3, 39. तदा आ निरुणाद्धि यात्राम् VARĀH. BRH. S. 89, 14. 86, 56. — 3) *einschliessen, einsperren*: श्रतिष्ठन्निरुद्धां श्रापः पणिनैव गावः RV. 1, 32, 11. निरुद्धश्चिन्मिक्षस्तर्ष्यावान् 10, 28, 10. याचितं निरुन्धानः *einschliessend, nicht herausgebend* AV. 12, 4, 80. 5, 17, 12. ÇAT. Br. 3, 7, 2, 8. विप्रदुष्टं त्विषं भर्ता निरुन्ध्यादेकवेषमनि M. 11, 176. KATHĀS. 34, 184. गिरिव्रजे निरुद्धानां राज्ञो कृत्तेन मोक्षणम् MBH. 1, 409. R. 5, 16, 51. निरुद्धतोप (मकरालय) 93, 11. BHĀG. P. 5, 26, 34. मनो हृदि निरुन्ध्य BHAG. 8, 12. einen Weg *versperren*: निरुन्धानाः सतां मार्गम् KĀM. NĪTIS. 4, 12. मार्गं निरोद्धुम् MRĀKĪH. 83, 23. न्यरुन्धंश्चास्य पन्थानम् BHATT. 17, 49. einen Ort *einschliessen, belagern*: निरुद्धुः — बलीर्नृपमन्दिरम् RĀGĀ-TAR. 1, 368. राजधानीं निरुद्धवान् 6, 125. BHĀG. P. 9, 6, 16. 10, 50, 4. 76, 9. *verschiessen, schliessen*: निरुद्धे नन्दिना द्वारे KATHĀS. 1, 46. 50, 188. निरुद्धवातायनमन्दिर R. 5, 2. श्रोत्रे निरुद्धे मया Spr. 996. die Sinne, das Herz (gegen die Aussonwelt) *verschiessen*: निरुन्ध्य चेन्द्रियग्रामम् MBH. 3, 13633. निरुद्धचेतसो ऽन्ताणि निरुद्धान्यखिलान्यपि Spr. 1604. मनो निरुन्ध्यात् 2867. द्वारं निरुन्ध्यासुम् BHĀG. P. 4, 8, 80. निरुद्धकरपाशय 1, 13, 53. यदा चित्तं